"नेपाल" शब्द - उत्तराखण्ड श्यामा - प्राचीन साहित्य में "नेपाल" शब्द का उल्लेख - नेपाल को भौगोलिक - स्थिति, सोम, क्षेत्रफल, उष्णक्षेत्र - प्राकृतिक - विभाजन-क्षेत्र, पर्वत-प्रदेश, पर्वतोयन-भूमि, तार-राजनीतिक या प्रशासनिक विभाजन-यास्त्र नेपाल के बाह्य कांडों उपलक्षण - नेपाल की विभिन्न स्थ-वेया - पोशाक-वाल, अनुष्ठ क्षेत्र, लिखित-वाल, मेक-वाल, गाह-वाल, राणा-वाल, जन-तीमक काल-समाय, धर्म-संबंधित लोर भाषाएं-नेपाल के कुल विश्वस-नेपाल को प्रधान जातियाँ - सामाजिक - जोतन-शक्ति-जोतन धार्मिक - जोतन -नेपाल को भाषाएं और जातियाँ।
"नेपाल" राष्ट्र - उल्लिखित लोग व्याख्या:

लाज "नेपाल" राष्ट्र का प्रयोग सम्पूर्ण नेपाल देश के लिए किया जाता है और यह प्रकार का "नेपाल-देश" का अर्थ दक्षिण व्याख्या हो गया है। लाज प्रवेश लग्य और दूरस्थ, विशेषकर लोग जमा करना नेपाली अपने देश को नेपाल कहता है और लोगों के अंग्रेजी नेपाल राष्ट्रीय और विश्वविद्यालय मान्यता प्राप्त है। किन्तु "नेपाल" राष्ट्र का प्रयोग सदा से हो कि अर्थ में होता ला रहा है, यह कहना एक बहुत बड़ी भूल होगी।

व्यक्तिगत प्राचीन काल से नेपाल राष्ट्र ने प्रयोग केवल उस क्षेत्र के लिये होता ला रहा है, जिसे हम लाज नेपाल-उपत्यका कहते हैं। यह नेपाल-उपत्यका तात्कालिक लोगों-धारी है जो नेपाल की वर्तमान राजधानी है। लाज भी नेपाल की लेखित अनुसार का राष्ट्र का प्रयोग केवल कालांतर-केंद्र के लिए ही कहते हैं। केवल नेपाल वा हर नागरिक स्वतंत्रता का दृष्टि में, नेपाली नागरिक है, नेपाली है। पर जिसे होने-भागे सरल लोगों के लिये, "नेपाली" होने के लिए कालांतर-धारी अन्य नेपाल-उपत्यका का बिन्दुत्रों होना आवश्यक है। उपत्यका से बाहर सरकारी लोग अपने बाहर बहुत होते, मेंतों या तार-निवासीं बनते हैं। अयोध्या रिश्ता के प्रारंभ - प्रारंभ अरे संगीत धारकों के प्रारंभ धीरे-धीरे का मनोक्रिया में परिवर्तन ला रहा है और नेपाल राष्ट्र, सम्पूर्ण देश के अंग में मान्य लोटा जा रहा है।

"नेपाल" राष्ट्र को व्युस्त किया, नेपाल उपत्यका को व्युस्त किये समस्तिक है। लाज: नेपाल-उपत्यका को उल्लिखित के बारे में कुछ लेखों से परिचित होना आवश्यक है। नेपाल के बारे में हर लोगों और लूटूरी लिखने वालों कि बहुत कुछ लिखा है। एक बार जिसकी चर्चा सबों की है, जब यह है कि एक व्यक्ति प्राचीन काल में नेपाल नहीं जल-जल थी।

लूट पर उपमाण को कथा रचना के लिए प्राचीन साहित्य में उपक्रम है। महाप्रायो से यह कथा नेपाल-उपत्यका को उल्लिखित है भी खूब है। दृष्टि मान्यता है कि राष्ट्र में यह धारी एक विवाह समूह के गर्म में झूमी थी। प्राचीन साहित्य में यह लोक की चर्चा "नागरिक" नाम से को गया है। हिन्दू-सन्तुलित के अनुसार विद्वान ने
लग बोझ मान्यताओं के अनुसार वैश्विकता में सुधार ने वाहकों का व्यवहार मार्ग गोल कर जा सर्वे वाजन विकास और क्षत्र प्रकट हुई। भुगुर्भ-सारस्वते के आरोपण ने भी क्रा मान्यता को पुनर्ग्रहण को है। नेपाल के शेतीविद्या, वाश्मोर, गुहान और अण्जुपुर की उल्लिखित के बारे में भी पेश हो कथा प्रविष्ट है।

का प्रथम नेपाल-सारस्वते की पुनर्ग्रहण का शेती वैश्विकता में सुधार को है। उपत्यका-पुनर्ग्रहण के बाद यहाँ "चैनी" भुगुन का लगभग हुआ। इसके इस व्यक्ति ने वेंकटेंगे के का के का विकास हुआ और इसके नाम पर का उपत्यका का नाम "नेपाल" पड़ा। नेपाल-सारस्वते के प्राचीन-विवाह धर्म का पुरुषा पुनर्ग्रहण की भी क्रा कथा का उल्लिखित है - "प्राचीन वान में "चैनी" नाम के विद्वान का के का विकास हुआ और इसका नाम "नेपाल" गया।"

भुगुनी और "चैनी" भुगुन दोनों का वैश्विकता में विकासका का रूप देना का एक उद्देश्य है।

"नेपाल" शब्द को उल्लिखित का है। वाजन विकास का जाल वाजन ने का शादी का क्रा कथा हो विद्वान को व्यक्ति के अनुसार का उल्लिखित को था। उनके अनुसार विद्वानों-वर्गों प्राचीन की भारतीयों में "चैनी" शब्द का अर्थ दर्शन या विज्ञान-संस्थान एवं "पान" शब्द का अर्थ उन होता है। यह उनके अनुसार नेपाल का अर्थ हुआ - "उन वाह \* नामा ध्वनियों में भी "चैनी" का क्रा है प्रेम रक्षा या गुलाम।

नेपाल, भारत और चीन के मध्य में प्रथम है। नेपाल उपत्यका का विवाह प्राचीन जान से भर भारत और तिब्बत के लिये उन को नहीं या बागर के रूप में प्रत्यावर्त नहीं है। वाजन के "भारत-विस्तार इयता शहर" और वित्स्वते के "अपि-आपि" के भी का क्रा की पुनर्ग्रहण होते है। नेपाल के माध्यम से हो तिब्बत के बोध-वर्धन का प्राचीन-प्राचीन हुआ।

नेपाल नेपाल प्राचीन के लिये नन्दस्तान देश बन गया। नन्दस्तान के लिये प्राचीन वाणिज्यिक भारत के वाणिज्य और नेपाल का विकास अर्थ "उन ती वाणिज्य, जो है देशों का विनाश-स्थल हो" हो गया। नेपाल का ध्वनि-ध्वनि समुदाय ध्वनि का नाम नेपाल हो गया। यह वाणिज्य प्राचीन तहत हो भागों के अन्य विभिन्न विभिन्न की तारे के पत्ते
प्राचीन साहित्य मे "नेपाल" शब्द उलेकः

प्राचीन भारतीय साहित्य मे "नेपाल" शब्द उलेकः  नाम लाभान्य लक्ष वे कन-कल उक्त कु ध है। किन्तु उलेकःों से अलग होकर कौन कहाँ वर्णन बनाना प्राप्त नहीं होती। इन उलेकःों मे नेपाल से समस्त विस्तार महत्वपूर्ण घटना का वर्णन कइ नहीं दिखाता। बसा एक वर्ण कारण इसको भोगीक दक्षता या दिव लक्ष के होने हो सकता है।

"नेपाल" शब्द व प्रथम उलेकः अवर्ण परिवर्तन मे प्राप्त होता है। किन्तु कसा चचा-चावल निर्देश नहीं है। इसके बाद वोल्टास मे वर्णास्त्रेष्ठ है। कर सन्तुष्ट है। नेपाल का विचार उद्वेद से योगदान का वताया गया है। किन्तु कसा चचा-चावल द्विवर्ज होने के कारण ज्या मेरिक चर्चा महत्वपूर्ण नहीं होता है। जो प्रायः ताराहुर्णण मे पहुँचें-के च विचार चोद थोड़ा जताया गया है। [12] सन्तुष्टुराण मे नाम-लक्ष। [102-16] और लक्षण प्रवाहक [39-5] गुणधर्म भोगीक पुराण मे नेपाल का उलेकः दिखाता है। सन्तुष्टुराण मे रेता-कण्ठ, देवो-पुराण, वृहत्संहित से नृत्य-नृत्य शास्त्रों के आवागमन हर वर्ण का नाम नेपाल का राजा करता है। जा देखा शब्द का देखा के तत्त्व श्लालित है। [13] गुणधर्म शब्द के साधण प्रतिश जन्मता है। जा देखा शब्द का देखा के तत्त्व श्लालित है। [14] बसा शब्द की साधण भारत दुनिया मे लोग प्रसिद्ध नाम-शास्त्रों के रचना कर रहा है। जा देखा मे भारत के साधण शब्द के साधण जन्मता का भी उलेकः है।
As any one may ascertain by consulting a map of India, the kingdom of Nepal is a small independent state, situated on the northeastern frontier of Hindustan. It is a strip of country about five hundred miles long and a hundred and thirty broad, lying between the snowy range of the Himalaya on the north, Sikkim on the east and the provinces of British India on south and west. (16)

As any one may ascertain by consulting a map of India, the kingdom of Nepal is a small independent state, situated on the northeastern frontier of Hindustan. It is a strip of country about five hundred miles long and a hundred and thirty broad, lying between the snowy range of the Himalaya on the north, Sikkim on the east and the provinces of British India on south and west. (16)

समय एवं सत्कारों सहायता-समय समय विषय नेपाल वास्तव में पश्चिम का पूर्व में है। नेपाल भारत की उत्तर-पश्चिम पर आयतन प्रदेश भुगोल तथा सार्वजनिक लोक नेपाल तथा भारत में पश्चिम का पूर्व तथा है। नेपाल भारत की उत्तर-पश्चिम पर आयतन प्रदेश भुगोल तथा सार्वजनिक लोक नेपाल तथा भारत में पश्चिम का पूर्व तथा है। नेपाल भारत की उत्तर-पश्चिम पर आयतन प्रदेश भुगोल तथा सार्वजनिक लोक नेपाल तथा भारत में पश्चिम का पूर्व तथा है। नेपाल भारत की उत्तर-पश्चिम पर आयतन प्रदेश भुगोल तथा सार्वजनिक लोक नेपाल तथा भारत में पश्चिम का पूर्व तथा है। नेपाल भारत की उत्तर-पश्चिम पर आयतन प्रदेश भुगोल तथा सार्वजनिक लोक नेपाल तथा भारत में पश्चिम का पूर्व तथा है। नेपाल भारत की उत्तर-पश्चिम पर आयतन प्रदेश भुगोल तथा सार्वजनिक लोक नेपाल तथा भारत में पश्चिम का पूर्व तथा है। नेपाल भारत की उत्तर-पश्चिम पर आयतन प्रदेश भुगोल तथा सार्वजनिक लोक नेपाल तथा भारत में पश्चिम का पूर्व तथा है। नेपाल भारत की उत्तर-पश्चिम पर आयतन प्रदेश भुगोल तथा सार्वजनिक लोक नेपाल तथा भारत में पश्चिम का पूर्व तथा है।
भारत और नेपाल के बीच वो दीर्घ प्राकृतिक सीमा नहीं है। सन 1816 में 80 लोग गृहस्थी -

graphical location of the country lies between 80.15-88.15(23)

east longitude and 26.200-30.100 north latitude.

उन - सैक्षण :

सन् 1951-52 को उन-सैक्षण अनुसार नेपाल की कुल उन-सैक्षण 8473478 थी। सन 1961-62 को उन-सैक्षण अनुसार यह सैक्षण घटकर 9387661 हो गए। उस समय पतले छलावे की उन-सैक्षण 4533774, जराईस छलावे
Bounded on the north by the Tibet Region of China and on the south by India, its area is 54,662 sq. miles. It's breath from the north to south varies from 150 to 89 miles. The geographical location of the country lies between 80.15-88.15(23) east longitude and 26.200-30.100 north latitude.

उन - सूचेमा:

सन् 1951-52 को जन-गणना ल्युग्सार नेपाल ले दुबल उन-सूचेमा 847,3478 भिँ। §24। सन् 1961-62 को जन-गणना ले ल्युग्सार यह सूचेमा बढ्कर 938,7661 हो गए। उस समय पहली व्यापक उन-सूचेमा 4,533,774, तराई इलाके
को उन संख्या 3397003 तथा वाटरमार्क-उपत्ति की उन संख्या 456008 थे। 1981 को वे समय नेपाल को नकसन उन-गणना के लिए नेपाल के कुल उन-संख्या 14179301 है।

प्रामाणिक विवाद:

लक्ष-लय से उच्चर को अधिक में सक्षम नेपाल को चार भागों में परिभाषित किया जा सकता है —

1- हिमालय 2- पर्वत-प्रदेश 3- देशों गा पर्वतीय भूगर्भ 4- तराई।

1- हिमालय [[16000 से 25000 फीट]] :-

नेपाल के सुदूर में हिमालय पर्वत शृंखला है। यह नेपाल की उत्तरी सीमा है। यह प्रदेश में हिमालय की लोर विख्यात की स्वर्ण एवं धार्मिक स्थलों का सर्वोत्तम वर्ग, जो नदियों द्वारा धारा देते हैं। यह हिमालय शृंखला वहाँ धार्मिक स्थलों में नदी और जलवायु के लिए नदी के तट पर लोग धार्मिक स्थलों में नदी के पार पैदल जाते हैं। हिमालय के यह प्रदेश में जलवायु के लिए सूखे और गर्म तापमान होते हैं।

हिमालय के अधिक दृष्टि से कुछ विवाद महत्त्व नहीं हैं। अनेक समय लगाने वाली यह धार्मिक तद्वन्द्व का वेदना रहा है। हिमालय हमारे अवस्थित का अधार है और हमारे साहित्य में के महाकाव्य शान्ति प्राप्त है।

2- पर्वत-प्रदेश — [6000 से 16000 फीट] :-

मुख्य हिमालय शृंखला के समानांतर पर अपेक्षातः नगर केसी एवं लोग पर्वत शृंखला नेपाल के प्रायः स्थित में भी नदी से लोग पृथ्वी महाकाव्य के चक्कों हुए हैं। यह पहाड़ उपनिवेशी और कई जमीनों पर डूबे हैं जिससे ग्रामीण बने हैं लोग नदियों को मार्ग निकाले हैं। यह पर्वत शृंखला का नाम महाभारत है। यह प्रदेश का नेपाल के समानांतर स्थानीय में निकाल की दृष्टि से कुछ महत्त्व पूर्व पूर्व नदी से लोग नेपाल की आवादो का
ख व् य भाग इसी के म निवास करता है।

3- केटो- $ 2500 से 4000 फीट $ :-

महाभारत पर्व-माठ के उत्तर और दक्षिण उदय की एक फली पढ़ी है जिसे नेपाल में केटो $ पर्वतीय भ्रमण $ कह जाता है। यह नौकरी के आवश्यक जोड़े-चोटी दुनिया में विकसित है जिसके वज़न 5-10 और लम्बाई 20-40 मील के लगभग है। यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है और यहाँ धान, मकई, गेहूँ और आलू उगाता है। ऐसे प्रदेश में जलवायु डूबिंग से महसूल जमता है और जन की छोटी-छोटी पट्टी धारारूढ़ है जो मेंदानी बनाकर में निर्माण नदी में प्रवाह हो जाती है।

4- तराई - $ 0 से 2000 फीट $ :-

महाभारत पर्व के दक्षिण में, जसे वे समानांतर वाम-पश्चिम का एक प्रदेश है जो हिंसक भवानी तथा स्वादों के कार के केला है और जिसमें स्वातंत्र्य स्थल तन से 2-3 हजार फीट तक है। ऐसे देश में सेबों के भागाती एक वन को एक पट्टी है जिसे " चारों बाही बाही " कहते है। इस प्रदेश के तराई कहलाते हैं। क्याउं नेपाल का सर्वश्रेष्ठ भवानी के हैं और बाही बाही में स्वाजीलंदियाई तथा भारत की लकड़ीयां को प्रजुता है। यह चारों के- " बाही " नेपाल सरकार का नागरिक नेपाल सरकार का नागरिक का भूमिका स्वीकार है।

चार जंगल के उत्तर और वाम-पश्चिम के पश्चिम के दक्षिण के वीर अश्वत्त उपजाऊ और सकल नेपाल की एक फली पट्टी है जिसके वज़न 10 से लेकर 30 मील व्यापक है। नेपाल का यह नेपाली भाग, मगापुरास्थल नेपाल की भूमि, नेपाल में जिसे अश्वत्त मह बिंदु जैसे होते हैं और उन्हें लेकर भूमि को पतल होते है। सरकारी नौकर का तीन चौथाई भाग की प्रदेश से बिंदु पर नेपाल की उपरिभाग का अधिकार का फल के में निवास करता है। तराई, नेपाल का सर्वश्रेष्ठ जीवन, जागरूक लोग सम्पन्न के हैं।
राजनीतिक व प्रशासनिक विभाग :-

17 वो हालात में नेपाल जेब छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था। वो 5 पृथ्वीक नागरिक राष्ट्र ने जब होटे-छोटे राज्यों को जोड़कर नेपाल वा पहलों करना लिया और कर्मान नेपाल-राष्ट्र वो स्थापत्व दर था। प्रशासनिक तुलना के लिए लागू करना देना, तेज प्रेक्षक और लेह रजिस्टर द्वारा विभाजित है। प्रेक्षक प्रेक्षा भी होता है, वेल लोट दृष्टि द्वारा देखा है। नोए प्रेक्षा, जिले लोट उन्हें मुख्यलय का स्विच विकल्प दिया जाता है।

प्रथम कोरी-प्रेक्षा

<table>
<thead>
<tr>
<th>किला</th>
<th>मुख्यलय</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>काली</td>
<td>काली</td>
</tr>
</tbody>
</table>

प्रथम नं-1-डिस्नु पर लोल, वडाना चौक- वॉल्ट, डिस्नु|
प्रथम नं-2-देलना | रामनगर |
प्रथम नं-3-किल्लो | लक्टोला |
प्रथम नं-4-मोहनपुर | मोहनपुर |
प्रथम नं-5-किल्लो | किल्ला |
प्रथम नं-6-लालम | लालम |

मोह भाग:-

कालानपुर
पोखराई
उदयपुर
tाराई
वास
रोखट
पार्सी
स्वाबो
कोस्तिय लिदार
मचानी
जेल्ली
राजीव
<table>
<thead>
<tr>
<th>मोरठ</th>
<th>चिरागपत्ता</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>भाषा</td>
<td>बांसा</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### भिक्षु - गण्डकी-प्रदेश

<table>
<thead>
<tr>
<th>पहाड़</th>
<th></th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>परिचय ००-१</td>
<td>नुवाकोट, नामोटाड़ा, सत्राना</td>
</tr>
<tr>
<td>परिचय ००-२</td>
<td>गोसाँ</td>
</tr>
<tr>
<td>परिचय ००-३</td>
<td>लक्ष्मण, काशी, लोही</td>
</tr>
<tr>
<td>परिचय ००-४</td>
<td>भिङ्गीट, गर्गो, लोही</td>
</tr>
<tr>
<td>पांडा</td>
<td>तालासन</td>
</tr>
<tr>
<td>बाग्झुङा</td>
<td>बाग्झुङा</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### प्रेषण

| चिकोप | 
|--------|-----------------|
| नक्सो | नक्सो |
| दाड़ो | छोराई |
| दृश्युरो | छोराई |

### तराई

<table>
<thead>
<tr>
<th>पाण्डी</th>
<th>प्यासी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>माझकम्पड़</td>
<td>भरहवा</td>
</tr>
<tr>
<td>क्षेत्री</td>
<td>तोलिहवा</td>
</tr>
<tr>
<td>स्वराज</td>
<td>बहादुरगंज</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### कणागिनो - प्रदेश

<table>
<thead>
<tr>
<th>पहाड़</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>प्रताप</td>
</tr>
<tr>
<td>सत्यान</td>
</tr>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
</tbody>
</table>

---
देशान्तर में स्थित है। इसे चारों ओर 4000 से 8000 फुट ऊँची पहाड़ी है।
यह घाटी नामक निर्माणकर है और इसका केंद्र लक्ष्मा 250 करोड़ है। इस
पर्वतकोच का निर्माण "नामठ" नामक से जल प्रवाहित लोने पर हुआ।
पहाड़:-

<table>
<thead>
<tr>
<th>देशव</th>
<th>देशव</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>बुकेत</td>
<td>बुकेत</td>
</tr>
<tr>
<td>कोटो</td>
<td>कोटो</td>
</tr>
<tr>
<td>टेट्टेबुरा</td>
<td>टेट्टेबुरा</td>
</tr>
<tr>
<td>लाघाम</td>
<td>लाघाम</td>
</tr>
<tr>
<td>बेटढी</td>
<td>बेटढी</td>
</tr>
<tr>
<td>जुम्ला</td>
<td>जुम्ला</td>
</tr>
</tbody>
</table>

मध्य से:-

| सुनारपानी | बकिबिर्याँ |

तराई:-

<table>
<thead>
<tr>
<th>बैली</th>
<th>नेपालज़</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>बैलिया</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>बेलातो</td>
<td>ज़ीन्नार</td>
</tr>
<tr>
<td>वंचनुर</td>
<td>वंचनुर</td>
</tr>
</tbody>
</table>

खास नेपाल अर्थात काठमाडौँ - उपत्यका:-

"नेपाल" राष्ट्र का प्रयोग अर्थ सम्पूर्ण देश के लिए किया जाता है। दोर का प्रवार का शास्त्र का अर्थ-विशिष्टतार पूरा है। दोर पहले क्षण प्रयोग केवल काठमाडौँ-उपत्यका के लिए लोटा था। इसलिए काठमाडौँ-उपत्यका को अर्थ भी "खास नेपाल" कहते हैं। यही खास नेपाल वा काठमाडौँ अर्थ सम्पूर्ण देश को राज्यानाही है। काठमाडौँ तास्ति में नेपाल का पृथिवी है क्योंकि यह नेपाली सम्बन्धित-संबंधित, भाषा और साहित्य का केन्द्र है।

काठमाडौँ घाटी उत्तरी गोलार्ध के $27^042'$ लोर $85^036'$ पूर्व देशानत्त्र में स्थित है। दोर घाटी तर 4000 से 8000 सेट ऊँचे पहाड़ हैं। यह घाटी लाघाम रिखूकार्य हैं दोर क्षण केवल लाघाम 250 किमी है। यह उपत्यका का निर्माण "नागङ्गुड"स्थल से भी प्रवाहित होने पर बुझा।
काठमाडौं में दो श्रेणियों का नाम है और यहाँ हिन्दू लोग वोध मीरों

काठमाडौं-उपत्यका
(खाका)

निम्न दृष्टि से प्रदेश के अंतर्गत है। यातायात के साधनों के उपाय के कारण एक के के लोगों का समर्पण इसी के लोगों से हो पाना उस्त्क रीत नहीं है। देश भर के लिए एक सामान्य भाषा का प्रयोग, यही कारण, यहाँ की नहीं हो सकता।

आधुनिक युग में संसार के प्रभाव-स्वरूप वोध संगठन की दृष्टि से लोगों

"नेपालोपनना", जो भाषा जार्ज़ और रिकार्ड चुए है और यही नाम के कारण -
भाषा धरों धरों राष्ट्रीय भाषा में प्रतिस्थापन होता जा रहा है। नेपाल के अन्य भाषा-
भाषाओं लोग भी अब नेपाली को समय-भाषा के स्थान पर प्रयोग-उपयोग करने को है।
वामालो मी दोरे देखताहो का नाख हो देगे हिन्दू लोर लोम भीडो को भागर हे । यह हिन्दू लोर बोह धोमो का लाम स्थल हे । पशुकु तात्त्वात लोर रेखेनाथ का प्रियदइ मीदर यही हे ।

"वामालो" हार्द्द को व्युक्तित "वामाल-मण्डप" शाब्द्द से हुआ हे । देसा कहा जाता हे रि मी चाँद-चाँदा के उक्सर पर, मी बाबुन्डा का दल्लै करने के लिये कार्यालय, मुख्य का स्थान धारण का फुट-फुत पर आया । चिन्ता फिर बढ़ई न उसे पहचान किया लोर पड़का लिया । मुख्य-न्यू कालीन ने उस बढ़ई को अमरता का अथरीत किया । का होकर निवेदन स्थान पर फिर आना मुश्किल पड़ा । उस बढ़ई ने जो एक बड़ी की लकड़ी से बिन्दाला वामाल-मण्डप का निर्माण किया जो अथवाओ दिखाई है । जो मी वामाल-मण्डय के नाम पर एक जाह का नाम वतामालो या वामालहुरा हुआ । यही वामालो एक देसा वो राजनीति हे । भक्तुर देश गीतलोक पहुँचने के दो अन्य प्रमुख शहर हे ।

प्रतिवासी स्व-सेवा:

किसी भी भागा के कितास का उस देशा के इतिहास से अथवा धीमीत सम्बन्ध होता हे, जिस देशा या के किरङ्ग में उस भागा का विकास होता हे । नेपाली भागा या विकास रिन पिरिस्थितियों में हुआ हे, उन पिरिस्थितियों को पृथिक तथा पिरिस्थितियों को अथवा लाभकारक होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना अथवा लाभकार होना ।

नेपाल एक अथवा लोहहुड लोह दुर्गा देशा हे । भारत दुक्षित से यह देशा लेक लोही देशा के विभिन्न हे । दोनों देशा दुक्षित से यह लोहो-लोहे भागो देशा हे लोहो-लोहे दुक्षित से प्रवेश के का अलावा-अलावा हे । वातावरण के साथों के आवाज के कारण एक देश के लोगों के सम्बन्ध दसे के के लोगों से हो पाना अथवा लाभकार किंक हे । देश भर के रिया यह सामान्य भागा का प्रयोग की कारण, यहाँ की नहीं हो सका ।

आधुनिक युग में शिक्षा के प्रचार-प्रसार देश लोहार साथों लोगों की सुधिता से लोगों में " नेपालोपनाम " की भाषा जागरूक लोर दिखाई दुर्गा देशा अथवा नागर के रूप - भावा धीरे-धीरे राष्ट्रीय-भावा में प्रतिपाद होती जा रही हे । नेपाल के अन्य भागा-भागी लोग भो अब नेपालो जो संयम-भागा के स्थूल प्रयोग-उपयोग करने लोर हे लोर
तास्तीफ़क अवृि में नेपाल अथि देश की राष्ट्रभाषा बनते जा रही है।

वास्तव में 17 वीं शताब्दी तक नेपाल एक देश या राष्ट्र था ही नहीं। वर्तमान नेपाल कोटे-कोटे स्तरीय राज्यों में विभाजित था और प्रशिक्ष के द्वीप भाषा भिन्न थी। 18 वीं शताब्दी में श्री 5 दूसरी दर्शनावली शासन ने इन कोटे-कोटे राज्यों को जोड़कर वर्तमान नेपाल-राष्ट्र बना निवासी लोग जो सभी से नेपाली का एक विश्वस और व्यापार-व्यवहार देता। नेपाल-राष्ट्र के निर्माण के प्रथम क्षय परिवर्तन थीं, जहाँ समान थे लिये नेपाल के इतिहास के स्विम्ब शावकी देश नेपाल उपयुक्त होगा। नेपाल के प्राचीन इतिहास के बारे में विश्वस प्रथम क्षय बुद्धिमत्ता और वह भी कहना कठिन है जो उसे अभाव करना अधिक उपयुक्त है। नेपाली-इतिहास का प्रकार खोजने नेपाली और देशी लोग नेपाली नेपाली जिसमें निकलता नेपाल की भाषा-क्षेत्र को रचना में राज्यों के दर्शन-वाले में हुई। मुख्य राज्यों तक 12 वीं शताब्दी के 18 वीं शताब्दी तक शासन किया। "क्षेत्राको" में 18 वीं शताब्दी का अंत या 19 वीं शताब्दी के प्रारंभ के बीच होने चाहिए।

19 वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही नेपाल से तीव्र-व्यवहार का सूर्य प्रारंभ हो गया था। इस्ट फिळिया क्षेत्र के उपवन-शिक्षक ने क्षेत्र ने लोग लोग लोग शासन हुआ और भिन्न-भिन्न भाषा अलग अलग अलग अलग शासन हो जो योग में निकल पड़े। समृद्ध इस समुदाय जो देश का क्षेत्रों ने नेपाल की अनुरुप प्रभावित किया। 26वें नेपाला ने क्षेत्र या क्षेत्र ने क्षेत्र के संबंध में गहरायुहराराम साम्राज्य उत्कृष्ट की जोर उसे प्रकाशित करता। 27वें नेपालो इतिहास वो लेखा ने निर्मित चित्रों के लिए हामला का नाम विश्व उल्लेखनीय है। इस्ट नेपाल के संस्कृत के संक्षेप निष्ठा की जोर विश्वभर क्षेत्र का प्रकाशित करते। 28वें हामला के अनुसार मानिस के लेख के तत्काल और में अग्नि की 30वें अद्वितीय किराना ने भी नेपाल से संबंधित लोग और संस्कृत की प्रकाशित करता। "क्षेत्राको" को एक संबंध प्रोफेसर ने भी उपलब्ध किया जोर उन्होंने भी हो क्रांति कराया था। 31वें ही सभी पुस्तकों में क्षेत्र ने हामला द्वारा संपन्न दिनस्पर्श गहरायुहराराम नेपाल का इतिहास है जो अत्यन्त विश्वसनीय, गहरायुहराराम और उपयोगी है। 32वें
प्राकृतिक रूप से पढ़ाई गई व्याख्या।
को यात्रा लूटकर ने प्रारंभ हुई उन्हें घायल-स्तम्भ स्थापित कराया। ऐसे
प्रचार घायल नौकरों के निकट पात्र पहुँच और पात्र नाबाल के बारे में चार चर
स्थानों का निर्माण कराया। यह नौकर की पृथ्वी वातिलना और किसी नेपाली वीरत्व
हमारे देशपाल के रूप में भी उसके "वेधायको" में उपस्थित है। इन दोनों के जारा
देशपाल के रूप में निर्माण को करने में भी धीरेसनीयता की हक्क है।

गोतम मूल तौर पर घायल या नेपाल नगरका हिमाली राजाणी के शासन-
वाल में था। वह शासन-वाल एवं प्रायः 800 से 300 एव. अथवा कुल किसान
1200 संबंधी तथा माना जाता है। और यह निर्माण देखायत, कई पैट्टा और डिजिटल
राज ने अधिकार पर किया गया है।[37]

लिचवियाँ नेपालका राजा राजा में धारकह सन् 200 एव. शासन वाल माना जाता
है। रूपका की वृत्ता में "लिचविया" लिचविया।[38] शासन रूपुमसुव ओर लिचवियाँ
का समहवा छुआ करता है और अनुमान की वि बन्धों को लाभवाल के रूप नगरका
ने मायन भी जीता होगा। लिचवियाँ का यह देखा वेफ़ाला है। हुआ होगा।
प्रायः वर्तमान से विचित्र है कि नेपाली निचीन-राजाणी के आदित पुस्त सुपुरुष एवं
या पाटलिपुत्र से लाये।[39] नेपाल नबो भी गुस्ताराजाणी का उदय-लाल राष्ट्र.
राजा का पत्तन बाद ही लिचवियाँ ने नेपाल का शासन रखना लगाया। विलीग
नि या नाम ने यह राजा का शासन घोषित कर दिया। लिचवियाँ ने लाभ का,
शासन माना जाता है।

लिचवियाँ के बाद झुर्का-राजा, वर्णार्थ-राजा, वर्णी-राजा और रिपर सर्ब-राजा के छोटे-छोटे राजाणी ने नेपाल पर शासन किया। सन् 1418 एव। एक्सम
झुर्का राजा श्रीमद मिश्र में भागमतानी लगभग नभने अपनी पृथ्वी का विवाह का
उसे उपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया और इस तरह नेपाल पर भारत-राज का शासन प्राप्त हुआ।

महाराजा: सन 1419 के सन 1768 का नेपाल में महाराजा का शासन रहा। नेपाली निवास में जा जाने के लिए नेपाल में महाराजा के नाम से जाना जाता है। अतएव नेपाल में प्रतिष्ठा और प्रभावात्मकता प्राप्त की जाती है और नेपाली में भी उस राज्य का उलेख है।[42] मगन जानता का उलेख मूर्ति [43] और कोटिया [44] के अभिकथा में भी उल्लेख है।

महाराजा का प्रारंभ विरामितक्षेत्र से होता है। विरामितक्षेत्र के बाद तथ्यमें उल्लेखित मग, जयवीरवाल, जयसी मग और उन्नत मग वार्द राजाओं के नेपाल का शासन किया। मग राजाओं में ज्यादतम मग सभी राजाओं से प्रति प्रेम और सम्मान मिला। इसे कभी से बहुत बड़े राजकीय बाहरी स्थानों की स्थापना हुई। उपने सबूत राज राज्य के लिए इन संदर्भों में संक्षेप में नेपाल, दोनों भाग्यों को उन्नति हुई।

उपने समय में ऊपर सामाजिक सुधारों का शीर्षक निवादन दिया और विभिन्न धर्म के द्वारा जानते में विभिन्न कारकों का महत्त्वपूर्ण भाग किया।[45] नेपाल-अर्जुन को दिनक-कार्य-व्यवस्था के आगुआर शैक्षित्य में का प्रयोग भी करने हो प्रारंभ है। सामाजिक सुधारों के साथ ही उपने समय में वर्ष अन्दर लिया, केन्द्रीय योग्य ज्ञान की नाप-जोड़ हुई। उसका आदर्श निवादन और विशेष वास्तविक रहने को बहा का प्रारंभिक निवादन।

उपने समय में हार्दिक जानकारी में हार्दिक राजा ग्रहण कर दिनकु दिन यह उपने अन्य राज्य की विभिन्न अर्जुन के वर्ष में वापस दिया और इसे उत्तराधिकारी कल्यंत्र दुर्लभ सिद्ध हुए। परिकारण राजाओं के पास का राजा सम्प्रदाय ने प्रति विशेष और का प्रख्यात सेवाकार राजाओं का प्रस्ताव कुछ हुआ। भागों के राजा, विद्वान वस्तु को पूरी तरह से अनुभवात्मक बना उन्होंने, जो राज्य का तप सम्प्रदाय राजा के नाम से प्रस्ताव कुछ हुए।

राज: सालों राजाओं के भारत के परिचय प्रारंभिक और समाज के उत्तराधिकारी के साथ उनके उपने शासन का उपने शासन हुआ। उन्होंने उन्हों के राज्य से राज्य के राजा राजाओं, राजाओं
वर राजस्तान के उपर मुसलमान-शासकों ने उसका भुलाका किया। फिर भी तेरहवीं शताब्दी तक भारत में मुसलमान-शासन की नींव नष्ट हो चुकी थी। राजस्तान-बुन्द राजस्तान के क्षेत्रों के जातीय संस्कार से उड़ गए थे। उन्होंने तद्वर्ती जनसमुदाय को राष्ट्र के लिए प्रतिष्ठित स्थान का योग कराया था। जैसे कि वह विद्वान-वृत्त के साथ-साथ राजस्तान के क्षेत्रों के प्रायः सरकारी स्थापना को प्रारंभ कर लेने में छोटे-छोटे सक्रिय राज्यों को स्थापना नहीं वे का प्रयाश के साथ-साथ शताब्दी के पूर्वार्द्ध का नेपाल की कर्मनाथ सम्पत्ति सोमा के बीते प्रवास से उद्धुक्त राज्य स्थापित हो चुके थे। इन्हीं राज्यों में छोटे-छोटे अपने ग्रामीण राज्य भी बने रहते थे। गणक के क्षेत्र में स्वतंत्र व्यक्तित्व राज्यों ने एक राज्य गौरव भी अपने निकल स्थापना सन् 1559 का राजस्तान के पूर्व द्वितीय ने किया। जैसे प्रायः उन्नीसी-क्रीड़ा में बाक्सू छोटे-छोटे राज्य को। वे राज्यों में देखा दो राजकोश—सेनाकोश और शाही वाकुरों को किसे रूप में कुछ बढ़ बात है। पर प्राचीन राज-क्षेत्रों के बारे में कुछ कहना सीख नहीं है।

अन्य भी राजकीयों की भूमिका शेन-क्षेत्र के राज्य भी व्यक्ति को विचलित और विवेकरका द्वारा सम्मानित बताया गया। 1803 का सन् नेपाल शेन-क्षेत्र के विचलित पर अध्ययन के प्रवान का राजस्तान के नेपाल में प्रेरित किया। गौरव का रायही-कुरी-क्षेत्र भी विचलित-वाली दीपक के बाद ही नेपाल शेन कर शाही विवेकरका शासन को जीतकर छोटे-छोटे राज्यों की स्थापना की। इन राजस्तान के नेपाल में एक द्वितीय ने गौरव नाम ग्यान कर जीतकर गौरव-राज्य की स्थापना का ओर आ शाह-क्षेत्र का क्रांतिकारी हुआ। नेपाल का वर्तमान शाह-क्षेत्र इन्हीं द्वितीय शाह के द्वितीय शाह के उत्सर्जन है।

पूर्वी नारायण शाह:

पूर्वी नारायण शाह, शाह-क्षेत्र के समस्त प्रतिपक्ष राजा होर लाहुरुहु नेपाल राष्ट्र के सुरुवात करने जाते हैं। इनका जन्म सन् 1722 का हुआ था और वे शाह-क्षेत्र के प्रथम राजा शाह की क्षमताओं में लगे हैं। वोस नवीनी जन में ये राजा बने। ये अत्यन्त चाव, योग ओर स्वाभाविक थे। इन्होंने नेपाल के छोटे-छोटे राज्यों को जीतकर नेपाल को एक छोटे में जाने का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अर्थ किया।
Nepal entered the modern age in 1769 when the political integration started by Prithwi Narayan Shah reached the climax with the subjugation of the Kathmandu Valley. Earlier Nepal was divided into a number of Principalities conducting interim wars. It was a moment of crisis in the history of Nepal. Across the southern border of East India Company was advancing the flag of British Imperialism in the Indian sub-continent. Nepalese Nepal was in danger of being swallowed up in the vortex of the British Empire unless a force capable of unifying the entire kingdom was to appear on the scene. Devoid Nepal stood no chance of forcing back the onslaught of the imperialistic forces. History singled out Prithwi Narayan Shah, the king of the Gorkha (now west no. 2 district) to undertake this supreme task of weaving Nepal into a political unity—a task which he fulfilled with lasting credit to himself, and winning in the process immortal gratitude of the generations to come.
पुत्रवी नारायण शाह ने नेपाल के दिल्ली से एक मोड़ बिखा और श्रोत को बदल लिया। उनका जीवन फुल और विस्मय में बोता। घटना पूर्व जीवन के कारण शासन युद्धमा में दृष्टिकोण परिवर्तन और सुधार का वक्ता उन्हें नहीं मिला। फिर भी भारत में कृती की हटाई से वे चित्ताईल और असारभाव थे। कोईहर उन्होंने क्षमार्थ ध्यान प्राप्त किया जो नेपाल से संबंधित हितों से। वे वीर थे। नहान योगदान थे। वे स्वयं पूर्व-पीठों न थे। पर उनके दलबरे में कुछ गुणयों के वापस लाने का आश्वासन था।

पुत्रवी नारायण शाह के वाद दिन महाशास शाह राजा बने। पर मोड़-विलय के वाद उनकी मृत्यु हो गई। उनके उत्तराधिकारी रणगहांड शाह के साथ नेपाल और सिल्की से बोल फुला हुआ जिसमें नेपाल की स्थानबद्ध किया हुआ। रण बल न्तु शाह के वाद गरीबांधु-भी विलय शाह, राजवंश दिल्ली शाह और सुप्रिम रिक्ष शाह साधु राणाजी ने नेपाल पर शासन किया। किन्तु शाहहाँस के दिन वादली राजा, नाम माना कर राजा थे। वास्तविक सत्य राणा प्रधान-मैत्रियों के लिख ने भी। दलबरे सत्य-विलय के लिए भद्रमें और हताशों का बेना का चुट्टा था और राणा-क्षेत्र के गृह-विरोध का नाम उत्तर राणाजी ने कुछ सत्यांत के बाद नहीं। राणा-क्षेत्र दोनों तरह में ने लिया था और राजा कठुल्ला भर गए थे।

क्योंकि बोर निर्मल राणागाही थी?

के नाम के लिए ख्यात भी राणा-क्षेत्र के राणाजी ने नेपाल पर शासन कर राहा। किन्तु असम्भवित केंद्रों में, के राणाजी का कल्यान दीप्ति था। महाराजा कानपुर बुद्धम होर विलय शाह ने लाए थे। सूड़ा अर्काको को तो प्रदेश जो कुरां, बोहर, जसैनों और बाल स्थानीय नवाब का था। परंपरा को का नाम उत्तर उसने लागू सत्या करने के लिए और कहाराज के "श्रीम-क्षेत्र" और "लाल-पुंड" का भी लेखा से स्वाभाविक करना लाभ दिया। जंगलाहाँस ने प्रधान-मैत्री के बाद नेपाल पर मानना शासन लाना प्रधान-प्रधान किया और उसे महाराजा प्रधान-मैत्री को कठुल्ला भर गए।
1850 में मिलाकुल-गाव वो गांव के मेहरा-सम्पत्ति कूल निकल गया। उसके बाद महाराज कांग्रेस की विभागीय गृह भारतीय "सेना-सम्पत्ति" के समय में जीने वाले एक वक्त के थे। उन्हें स्वयं महाराज की संपत्ति छोड़ दी गई, सम्पत्ति सभा की वाणिज्य उसने ली और वे उसे हार्ड रहा करते लोग लोगों से मिलते-जुलते पर प्रतिकूल लगाया। जब उन्होंने मेहरा-सम्पत्ति का व्यापार का स्थान का "साहित्यिक ज्ञान" से दृष्टि रखकर अपने भाषा दिया राजाराम के समीप प्रकृत पढ़े पर उसने सेहार-सम्पत्ति का बेचा दिया।

राजाराम का यह शासन-काल सन 1846 से सन 1850 तक चला रहा। जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जब जे
क्षेत्रमूल राजाओं पर क्ष्या निर्धारण रचा जाता था। प्रशासकीय पद अधिकारी हो गया और गर्मस्थ पियारु की एक अपात ग्रामर ने लेता था। तबती लगभग फलोन के का नूतन में कार्थिक हृदय से कोई दिल्लिया दिल्लिया कार्थ नहीं चुरा तो देश राजाओं को व्यक्तित्व सम्पत्ति बन गया।

अबहार के मृत्यु के बाद उसका भार रणगोष्पव श्री प्रशासकीय नना, पर ब्राह्मण हो उसको हल्का कर दी गयी और लोग शाहीर ने हासका-भूरी अपने लाख ने ले लिया। लोग शाहीर के शासक-धर्म में अन्नहरू ने केस्क बार्थ छुए एवं अस्तित्व और पुरुषात्मक नहीं गये। सर 1901 में लोग शाहीर के बाद उसका भार जेज शाहीर प्रशासनी का बना। किन्तु कह नहीं हो आयोजी शासन निकलो लोग उसका भार बन्ध रही शाहीर उसे पद-चुक्ला कर रखा प्रशासकीय का लेता।

वल्ल शाहीर सन 1929 का प्रशासन की रहा। जल्दी तो 5 महारानी चित्र चित्र शाहीर की कल्याण चित्र लोग उन-सब्बर रेती निफित कर रहा था। भी चित्रचित्रा के दार्शन का आँक यह छोटे चित्र की आँक। जो भी नूतन दो भी 5 नूतन चित्र चित्रशाहीर हाँ। चित्र की आँक के प्रमाण फोटो ने उपित नरेश जो देश लोग कर देश के।

वल्ल शाहीर कुछ और क्रांति प्रशासन था। कही समय में बहुत से मुखर लोग चित्र चित्र के बार्थ सुन लोग यह व्यवस्था जोर प्रशासकीयों प्रशासन की रहा। वल्ल शाहीर को मृत्यु के बाद सन 1929 में भीम शाहीर लोग सन 1931 में उसकी मृत्यु के बाद कुछ शाहीर प्रशासन की रहा। कुछ शाहीर के बाद विचार: पदस्थ शाहीर लोग लोगल शाहीर प्रशासन की बने।

एक तो वर्ग के जो लोग निकली तामागाली है। प्रयासक-दशा को प्रकाशकों का राजन-प्रशासन 8 बार काटे रहे लाख और चित्र को गये। जाते में वे लोग, वीरवरों, राजवरों, भीरवरों, द्रव्यवंश में लाल नूतन के लोगों में शामिल देन-देते शरीर और अन्य जीवन के दायरा नहीं लगा लोग का लाल देन-देते राणाजवरों के लोगों में लाल नूतन के लिए काम कर दिया।
राणागाने ने भी ५ दिशिका लो बदो बना रहा था। वे लब क्षण हो चुके थे और बदो जोन से रफ्ने को लगे राणागाने ही भी लो देना लो नुकसान करने का संकेत कर चुके थे। भारत के स्वतंत्रता का वादोन जोर फड़ धरा था और धसे पद-पिटा स्वतंत्रता के विश्वास कर देने लगे थे। भारत के स्वतंत्रता का ज्ञान करना, नेपाल के नंदेन्द्र जी के साथ ही भ्रमण को समाप्त लो ज्ञानार्थ नेपाल के स्वतंत्रता का ज्ञान कर देने लगे थे। भारत सरकार को मद्दत के राणागाने को समाप्त लो प्रजातीतिक नेपाल की स्थापना हुई। १५ जुलाई, १९५१ के दिन नेपाल में गर्भ नेपाल एवं लोक नुकसान के समाप्त लो गर्भ में नाराजगाने लोटे। भी ५ दिशिका ने राणागाने और नेपाली लोक के गुरु-पुज्ञे मृदुल्लभ की धोखणा को लो नुकसान पर आश्वसित शासन-प्रणाली का आश्वसित किया।

ज्ञातित्रिक नेपाल:

सन १९५० को ज्ञातित्रिक, भी ५ दिशिका की दिल्ली-पाक, दिल्ली-नासरोता और सक्षमतासम्पन्न महाराजिकी को भी ५ दिशिका के नेपाल वालों के साथ ही राणागाने का शेष लो नेपाल में ज्ञातित्रिक शासन का प्रारंभ हुआ। महाराज-विकास ने निर्माण होने तब विश्व व्यवस्था के रूप में राणागानी के समाप्तक स्थापना को धोखणा किया। लेखन विद्वान और राणागाने में तालेबन वेदाण मुश्किल था। देवा ने जिस दिशकों को जब पेश, नेपाली लोक भी नाराज कर दिया।

लोकों के गौर नामों लो गुह-भें निकायद्वारा प्राख्य को नवनिर्माण ने कर दिया। लोकों नामों के चित-फ़े के साथ-साथ नेपाल मे विभाजन प्रकाशपति की प्राकृति भी सदा के लिए समाप्त हो गयी। धसे बाद मात्रा प्राख्य कोवतले के प्रख्यात मंदिका ने नये मृदुल्लभ दि गया। हिन्दु जी की राजीव सो प्रयाग करना पड़ा। को बोध भी ५ दिशिका का मृदुल्लो हो गई देवा भी ५ गयेन्द्र लोक दिशिकावाल नेपाल के विश्वास पर बेदो।
महाराजाधिकार महेंद्र ने एक पराक्रमाधिकार से प्रमुख व्यवहार शासन करना आरंभ किया। किंतु राज्याधिकार तथा समाज के बाद राज्यनिर्माण दलों की मात्रावधारण बढ़ रही थी और विभिन्न लोगों की मांग बढ़ी जा रही थी। प्रत्येक शासन का विरोध बढ़ रहा था और प्रत्येक निर्वाचित के लाखों पर जुनून हुई सरकार की मांग होने की थी। महाराजाधिकार ने 1957 तक देश में नया जनाव का लक्ष्य रखा था।

फरवरी 1959 में नेपाल में पहला शाम जनाव हुआ लोग मई 1959 में जनाव के लाखों पर देश में नया मिश्रित वन बना। बी रिखेखर श्रीसाद लोकार्थ देश में प्रथम निर्देशक प्रधान-न्यून थे। रेल रिखेखर-डलों में स्थापना - गोष्ठ निर्माण करके बढ़ कारोबार शुरू क्यों नहीं उनके लिए त्यांचे फायदे की मांग होने की है। लाख जनता में भी विभिन्न निर्माण होता था व्यक्ति के लिए उनके दिनों का ध्यान न रखकर निर्देशक स्वामी थे। न ही नृत्य योग जनाव के हितों का ध्यान न रखकर निर्देशक स्वामी थे। न ही नृत्य योग जनाव के हितों का ध्यान न रखकर निर्देशक स्वामी थे।

फरवरी 1959 में नेपाल में पहला शाम जनाव हुआ लोग मई 1959 में जनाव के लाखों पर देश में नया मिश्रित वन बना। बी रिखेखर श्रीसाद लोकार्थ देश में प्रथम निर्देशक प्रधान-न्यून थे। रेल रिखेखर-डलों में स्थापना - गोष्ठ निर्माण करके बढ़ कारोबार शुरू क्यों नहीं उनके लिए त्यांचे फायदे की मांग होने की है। लाख जनता में भी विभिन्न निर्माण होता था व्यक्ति के लिए उनके दिनों का ध्यान न रखकर निर्देशक स्वामी थे। न ही नृत्य योग जनाव के हितों का ध्यान न रखकर निर्देशक स्वामी थे।

सामान्य संस्कृति और भाषाएँ:

नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राचीन संस्कृति के आधार पर, नेपाल के प्राची
सन्नद्ध नेपाल को लेखा उन्के पताके प्रस्ताव में ग्राम: लाबादो का लोगों है। नेपाल की लाबादो का फ़िचरण भी वहाँ के प्राचीनता विभाग पर लागू है। प्राचीनता कारणों से देश के भिन्न प्रस्तावों के लोगों का रंग-रूप, आवार-शरार आदि भी रिस्क ला जाता है।

प्राचीनता कृत्रिम से वह लाबादो की कृत्रिम से भी नेपाल वार मुख्य भागों के निर्माण है। नेपाल के उत्तर - सीमा पर भूतिया, तामाङ और शोरा लोग रहते हैं। जाति, रंग-भागा, आवार-विवाह, रूप और संस्कृति की कृत्रिम से वे व्यक्ति-जाति के हैं। महाभारत मुख्या के कुछ निवासी प्रथा, किरात, मार, सुधार, गुलाम और नेपाल हैं। भोलानाथ शेख और लाई के उत्तरी भाग में भार, दास्वार, भोला, गुलाम, गुरुलाम, भोग और भोलानाथ जाति के लोग बसते हैं। लाई मुख्य: भारतीय क्षेत्र के लोगों का निवास स्थान है। जनभोग भिंतरों के जनसंख्या कुलमान भी है। पर इनके संस्कृत विशेषता कम है। नेपाल की खुली जातियों के घर करते हुए यह बेकार राज्य ने गोरखा, नेपाल, मार, गुलाम, विषय, किरात, भूतिया तथा केला जाति का उल्लेख किया है।

काठमाडू सहित वेस्था के तोनों के - काठमाडू, प्राचीन और भक्तपुर के लेखा की लाबादो सहित दीक्षा है। ये लोगों भी षेख के जाति के हिप्पे जुले हैं इस विवाह की रोश के वारण। यह विवाह और व्यापार पर ग्राम: गुणों जाति का एक अधिकार है। 150] इसकी भाषा लेखा है जो तिब्बती से मिलती है। कुछ विद्वानों के मुताबू नेपाल कांग्रेस के राजा डिपलाइमेट देव के लेखा गुणात्मक के "नेपाल" के रहने में और नेपाल के लेखा तह के नेपाल बनाने का। 151] लोहरा-शेरों ने लिस राई लेखा सुधार की संख्या शिक्षा है। मार लेखा गुणात्मक निवास-स्थान गेको-के दे। कांग्रेस-प्रेमियों ने भी गुणात्मक तो जो प्राधिक लागा है।

नेपाल की प्राधिक-जातियों :-

विराजः - नेपाल को सबसे प्राचीन जाति विराज है। मुख्यतः के वहाँ, काठमाडू, आदि के साथ विराजः का भी उल्लेख मिलता है। 152] काठमाडू ने दुल्लू, नेपाल लेखा दुल्लू आदि के साथ जाता उल्लेख किया है। 153] विराजः का इस निवास-स्थान विराजः
वा दृष्टाण्य-पूर्वों भाग था। §54 § हाँ प्रेषण आज भी रियाज़ा के निर्यात के लिए लिपिबद्ध है। §55 §

आज निराल जाति, राई लोग विनयः मुखः दो भागों में शिल्पित है। चिन्म्
अपने लोग कषायी-पौर्णिमा मानते है। दीर्घा किरातों को जातीय विश्वास है।

सुन्दर: सुन्दर नेपाल जो एक प्रभु जाति है लोग यह रियाज़, सिरियाल और
बाक्कर में विभाजित है। कक्षा नामावरण विषयों और विवेक तीनों के नाम पर है।
सौल खल के लोग पर भी हिंदू जाति के समय में लोग के व्यापार का वे हिन्दु
परम्पराओं का पालन करते है। कक्षा सामाजिक - व्या का व्यापार का धारण करना
सम्पन्न होता है। नेपाल का 6 दृष्टाण्य-पूर्वों प्रेषण कक्षा निकास रहना है।

तमण्डो र मुखोः:

ये तिब्बती - खल के लोग है लोग नेपाल ना उत्तरो भाग कक्षा निकास -
स्थान है। ये "अद्वाराधज" और "व्यापारम" दो प्रभु जातियों में विभाजित है। "बक्सा-
व्यापार" लोग है लोग अपने को मोबेल ही संतान मानते है। मिहिरन के स्वामी हसी
दोलो गुण दोलो के सर्वाधिक निकास है। गुण दोलो विखालय प्रेषण के अन्य दोलो को
वेयर्ड के तिब्बती भाषा के अलग निकास है। §56 §

मार: मार लोग मोला खल है। लोग मुखाक्या नेपाल के फर्को दोलो के निकास
बिनाई है। अय-प्राकृत नेपाल के भोजी गोरो मोला यहाँ वर्तमान के असमान
क्षमों संस्कृति है। खा जाति के अपना तिब्बती संस्कृति दुर्घित है, पर विनौ के
संस्कृति-तुलना का भी बनार गहरा प्रभाव है। बुरूसी मार जाति को प्रभु जीविका है।

गुड़ोः: गुड़ो नेपाल के उत्तरो भाग में रहता है। लोग कक्षा समुद्र, व्यापार-प्रकार, धर्म-
समाज भाषा और बोलो भोट जाति के लोगों के लिए निकास है। गुड़ो-पाका इसी प्रमुख
जीविका है। खा जाति के लोग "चारजात" और "सोलंजात" दो मुख्य भाषाओं में
विनाई है। नेपाल के गुड़ो इसी भाषा में विनाई है। लोग खा प्रकार गुड़ो भाषा के
अनौसन्धानशील होता है। लोग विकास को "फेरा" कहते है। विकास के कार्य का लोग खुब का
कल गाँठ देख बिड़ा जाता है लोग "किस्सा" कह जाता है। §57 §
तिब्बती भाषा में प्रेशेता ना कर अनेक से भ्रष्ट ने प्रेशेता

नेपाल (सरकार)
पर्यावरण ग्राही

कोशों में का आलो प्रेशेता कर के पुष्प हैं। काँग्रेस वे अनुसार इसका नयापुरा प्रेशेता दृश्य को अंदर के हुआ। दृष्टि और पशुपतन इसकी मुख्य जोड़ीकर है। यह नेपाल को अन्तर्गत प्रायोगिक जानते हैं और इसका उभरने प्रायोगिक समय से भी उपक्रम है। अग्नि भारतीय प्राप्त वे दौर वन पर भारतीय संघर्ष और संस्कृति की गीतों का लाय कर है। ये बुध लोच और सच्चे बोल ले हैं और क्लो वाल इसका सत्यिक्रिया प्रोफार्न कोटा रहता है। तराई-प्रेशेता में सत्यिक्रिया लेखा इमों को है।
नेपाल का उल्लेख प्रेक्षा, रहस्यमयी रोग के मद्देना ने राहत है। इसकी संज्ञा संस्कृति, राजनीतिक रूप से भ्रम भूमि भोट जाति के लिए कितने है। वे अक्सर पर्याप्त देखने में सुन्दर नहीं होते। इनमें जो उचाई लोग सदृश बनना वो लोग है।

नेपाल: नेपाल उपबंध क्षेत्र में बाधाओं का रचना भन्ना स्थान है। नेपाल का विकास साधन में नेताओं का विकास है। इसकी संज्ञा संस्कृति, धर्म, सामाजिक सांस्कृतिक और बन्दर विदेश व्यापार उन्मूलन है। वहाँ के अनुसार इस "अर्थमूर्ति" और इसका यह निकास-स्थान देश को भारत का नायक-प्रेक्षा माना जाता है। वे कार्यान्वित करते रहते कामयाब के साथ नेपाल आए थे। 1856 के लिए निकले थे तथा वहाँ के अनुसार इनका हृदय भोग, जो प्रवासी का आधार पर नेपाल-उपनिवेश की जातियता का इतिहास जीवन विश्लेषण व्यक्ति देखा जाता है। नेवार भाषा और लोग-संस्कृति पर भी इसका प्रभाव काफी होता है। 1861 के लिए नेवारों को फिर जो उचाई जाति मानते हैं।

नेवार जाति दो मूल में विभाजित हैं - 1. बोड़मागी 2. शिखर-मागी या हिन्दु-शंभूमाली। बोड़मागियों पर भोट-संस्कृति और बिन्दु-मार्गियों पर हिन्दु-संस्कृति का गहरा प्रभाव है।

भारत: भारत भी जोर जैसा अभी तक के उल्लेख व्यक्त वह के झंझोलो हैं और नेपाल के क्षेत्र में बिन्दु-संस्कृति को स्वीकार है। इसका विषय पर नेपाल-प्रेक्षा दिक्कत को चर्चा हुई। इस विषय पर भारतों का भ्रम भूमि जोड़ता है। यह नेपाल के क्षेत्र में अभाव प्राप्त गरित है, और इसका उद्देश्य प्राचीन सांस्कृतिक निर्माण भी उल्लम्बित है। भारत भी अभी प्रश्न जाति है और इस पर भारतीय समाज का रोकथाम को गहरी भाषा है। वे कुछ सोचे कि जोर भरते हैं और वह तो उसका संस्कृति जोड़ना लेता रहा है। तराई-प्रेक्षा तथा संस्कृति तीव्रता इनको के हैं।
लिम्बुः: यार लोग गुड़ो को भेंटि, लिम्बु जाति भो जैनों क्या को है। ये लोग वाघाणों उपजावा वे गुड़ो पहाड़ों के कोड़े रहते हैं। ये यार को ज्यादा नहीं गाड़ते हैं। दो पर हिन्दू लोग वृहद गाँवों का गढ़ राज्य है। राज्य जाति के लोग भी
हथों के लिम्बु हो भाषा है लोग धार्मिक तथा हिरनु को हुआ वर्तमान है।

गोरखा: नेपाल की प्रमुख जातियों में गोरखा का नाम पहले शामिल है। ये क्रमांक:
राजुङ्गों को सन्तान है और मुसलमानों के आल्प्न के कारण राज्यान्तर के बनी लागे
हैं।65 हर्षवर्धन जिसका निवास क्षेत्र गोरखा नाम राज्य था, जहाँ से बाहेर-बाहर है
नेपाल के अन्य भागों में भी पैदा गए। ये लोग जाति के लोग हैं ओर नेपाल में उनकी
प्रवासी हैं। गोरखा शासन का प्रथम शासन वालवों शासनों में हुआ।66 वह
जाति के लोग भी लिम्बु हैं। शासन, सेना, रक्षा, धार्मिक लोगों उपजातियों में
समीक्षा, आर्थिक और गुरू भी गोरखा जाति के स्वरूप होते हैं।67 उनके भाषा
गोरखाओं के जैसे देखने से लिंग निकलता है लीलो जाति है। ये को नेपालों भाषा कहते हैं
और यहो नेपालो आज क्या नेपाल राज्य भाषा है।

उन दोनों भाषाओं हारणा है। "नेपाली साहित्य वा हिन्दी" नामक ग्रन्थ
में, नेपाल: ऐस का लग निकलता है। शासन कहाँ वाज़ नेपाली जोत्रों के लिम्बु पंजी
पर हर्षवर्धन उपजाति को दिसूं प्रभाव काल है। ये हम भी रोजाना वे शासन पर
नेपाल के सामाजिक, आर्थिक, यथार्थ जाति पंजी को सहिष्णु होते प्रस्तुत वर्तमान को
प्रस्तुत करते हैं।

सामाजिक जोता: नेपाल का सामाजिक जोता जाति-राृघे के शासन पर लिम्बु है
हर्षवर्धन पर स्थित सब है और पूर्वोक्तों का गड़बड़ प्रभाव है क्रर्यों का दीर्घ को संभाल
के लोग का लिम्बु उपजाति लोग पर्व-स्थापत्यों में दिलाता है।68 उरू
1550 को हर्षवर्धन जाति के फूल नेपाल मन्दिर-पुरा में रह रहा था। हिरनु कहिं
मात्र सामाजिक जोता में नेमा पर्वता मुक्त है। नेपाल ज्ञान-बाह्य देश है अगर यहाँ के
लोग 80% समुद्र, समुद्र गाँव और पर्वतों ही है। नेपालो जाति लिम्बु कहिं-पिछी के
लिए भी लिम्बु है।69 आर्थिक-अल्फे में परिवर्त दबाने के। हिरनु सामाजिक
वृक्ष-परिवर्त ज्ञान-बाह्य लिम्बु है। देश का लिम्बु ज्ञान गाँवों ने बनाते हैं।
लोक नेपाल अध भी मुख्य लग से लृभित्य-धारण देता है। नेपाल की केंद्रीकरण जनता करता है और इसके पात्र घटक यहाँ ने बने होते हैं। सामाजिक नेपाली अधूर संधि गहरी सुविधाओं से बाल है। क्षोभ कारण इसका रहन-सहन बहुत लोक-शादा है।

ज्ञान, चुल पायमान, कामसूत्र कोट और नेपाली टोपी-उनकी सामाजिक व्याप्ता है। सिंहासन साधन और बुरे सी पकड़ते है। नेपाली लिखितों में जो कहते हैं घटक प्रतिक्रिया के स्पर्शाभिज्ञन पहले तो विशेष राज्य है। बायाँ, उत्तर, दायीं और माई नेपालियों का मुख्य धोखा है। कुछ लोग भैंस, घरेलू, झुरा, घेंस, घास और दूध हरण का मास भी कहते हैं। चाय, फिशिंग और शाराम का नेपाल में बहुत प्रचलित है। यह लहर-रिकास लोग प्रथा है और समाज में लोग कई परिस्थितियाँ रखते हैं। 70 नेपाली लोग ने दिखावा-रिकास लोग प्रथा प्रचार करते है। नेपाल की लिखिता जातीयों का दिखावा रिकास प्रचार से होता है।

नेपाल के सामाजिक जुगन में पक्ष-रंगों का अधिकांश रहता है। नेपाली पक्ष-रंगों का लोक में बहुत मुख्त है। हॉट, पिलाव, पान, घोड़ियाँ, घास-बाग, इम्ड्राज, फिशिंग, कृषि-रिकास, लेहड़ेरत्म के खास अपनी और रामकाय नेपाल के प्रमुख त्योहार है। देहरादून राष्ट्र ने बारह अधुन पक्ष-रंगों का रिकास विधा है। 71 देर ने जामोजन गांव को हाय-तोड़ने और प्रति-प्रति में बहुत रिकास करते हैं। जो चार ने कहा यहाँ से लिखिता है। सामाजिक नेपाली वह प्रति के नाविकवालों ने प्रस्तावित है। 70 अधुन ने जैसे कई श्रेणियाँ ने वापसी की है।

आधुनिक जीवन: नेपाल का लृभित्य-धारण देता है और यही लृभि नेपाल के अधिक मुक्त हो जाता है। देहरादून राष्ट्र दिखाते हैं —— The great bulk of population is employed in agriculture as almost every family holds a small piece of land. (73)

कई धार, गेहूं, मांस या को मुख्य उपज है। गली में कुछ — जबूट निस्तर बिस्त है। किस्नु राघव देशा उत्कर्ष उपजात है और या के प्रति को फल लेते हैं। नेपाल में दिखाई ने सृष्टि नहीं है और या को सारी बनाती प्रौद्योगिकी को तृप्ति पर निर्भर है।
क्षणिक साधनों के भ्रम तथा भ्रम को निराशा के कारण नेपाल के लोगों जीताहरु में भी मध्य-पुनर्जीवन को कृपया उद्योग पूरा हुआ है। 748 उत्तम विषय के लोग, ग्राम लोग महीनों का उपयोग हरे प्रारंभ हो रहा है।

नेपाल खुश-खिलाये लोग अन्य खेलों का देखा है। नेपाल लोग नेपाल की समस्त ज्यादी प्राकृतिक समझता है। कला का बहुसंख्या लोगों लाग उपजन्य नेपाल देखा है। उक्ति का बहुत समय तक है नेपाल सरकार को प्रारंभ क्रममें दिये जाने होते हैं। विश्वस्वाद जमा में ले रहे खुश-खिलाये भी पाये जाते हैं। नेपाल के लोगों देखा खेले भी खुशी सेवा के पारे जाते हैं। निश्चित नेपाल लोग भुकु भी खुशी पाया होता है।

नेपाल में लोहा, ताँबा, होज़ा, लस्ता, नेक, चाली, तथा लोगाता जमीं बहुत खुश भी नेपाल भुकु माने नेपाल पाया होता है। निश्चित नेपाल लोग खेलों जमा के पारे जाते हैं।

नेपाल जमा गृह-उपयोग के लिए प्रायोजन का लें हो प्राप्त भी है। जमा जमा लोगा-दल के लें हो रहे निश्चित प्राप्त हैं। लुटा, लाहुर, गृह दल का भी उदय लोग लाहुर होते लाहुर है।

अत्याचार एक प्रभावित वेळ नेपाल और असर के जोक के खिलाफ है। अन्य भूपतिता नेपाल के लोगा प्रभावित है। नेपाल असर के लोगा नेपाल के लोगा स्तर है। नेपाल असर के लोगा नेपाल के लोगा स्तर है। नेपाल के लोगा स्तर नेपाल के लोगा स्तर है। नेपाल के लोगा स्तर नेपाल के नेपाल के लोगा स्तर है।

धारिता - जीवन: नेपाल पर हिंदू-राजन है। नेपाल पर हिंदू-राजन अन्य है। 759 यह देखा हिंदू-मूर्तियों को जन-मूर्तियों न है। जो भूमि पर शासकों, शासकों और जनताओं को रचना हुई है जो भूमि पर शासकों, शासकों और जनताओं को रचना हुई है। पारितोषिक, दुर्लभ, अभावी, दिल्ली और बुद्धि ने को भूमि को अपना जन्मभूमि बनाकर गार्थवाणियों की भावना ठिक तरह था। यह नेपाल शेष हिंदू-भूमि का बेहतर रहा है। 760 नेपाल शेष हिंदू-भूमि का बेहतर रहा है। नेपाल के लोग "नेपाल" बाज़े हैं जिसका अर्थ है तोड़काने अर्थ से निर्देशि के लोग नेपाल को उन्नत पाकर तर्क-भीम मानते है। 770 नेपाल के धारिता-जीवन के बारे में
As might be expected among so many races there are several religions. The Kashmiris and Iranians and Muslims. The Cokhas, Magars and Gurungs are Hindus. Their religions and customs are very much the same as those of the inhabitants of Hindustan. (78)

It is an ideal religious tradition of the Nepalese that the Hindus regard the Buddhist temples as much sacred as their own and the Hindu Temples are also sacred in the eyes of the Buddhist to the same extent. Whether it is a Hindu or a Buddhist festival, both the Hindus and the Buddhists celebrate and observe it equally. (80)
मेरी लंगड, गार्गार, भोजरा लाद उक्ता भौ भो छोटा लुक्काम से मनाने जाते है।

काव्याली न खेल देश की राजधानी है। प्रसुन्त, यह एक प्रमुख लोर्य-स्थान है जहाँ लेखे देवो-देस्तालो वा नीदर है। यहाँ है कुछ दारानीय स्थल हैं - पन्नू-पिलाव, सत्यनाथ, लोधानाथ, दुशारो देवो, कुम्हा भवानी, गोकुलकेश. मेनेन्द्रनाथ और ज्योत नीरक्ष लाद। लेखे देवो-देस्तालो के सीदर हैं, जो नेपाल को पिछली मनोक्रान्ति के परिवर्तक है। हस्तिलोक का गोया है - This valley is popularly known as the Land of Temples because it is abloom with temples, yagudas and shrines.

नेपाल के पेशाव नागर स्थान पर प्रसिद्ध मुक्तिनाथ ना मेदर है। उसी नामकता को विभिन्न मुक्तिनाथ के दाहिने पर केंद्र है जिसका वर्ण धूल जाते हैं। उसी में ज्युम्नू को लेते-किये तो यह स्मारक है। जहाँ भावना गुड़ का जन्म हुआ था। तब तक हिंदु को भ्रमर-लोक उकाल है। उकाल सीता के जन्म-भृंग है। द्वारका नेपाल स्थान ज्युम्नू के लिए स्थायी तोर संस्कृति का हृदय-स्थल है।

भागा और बोलियाँ: भोगोलक निर्भर के कारण भागा और बोलिया को उपस्थित है। भो, वेष, क्षेत्रों में निर्भरित न है। उपरेंद्र तथा भागा, जैसे के होलिका और नानक-ज्युम्नू भवानी लीलावती के लिए ज्युम्नू का व्यक्ति होता है। तब तक होलिका और ज्युम्नू भवानी में भर जलने के पोलों की सेवा करने वाले शिक्षक हैं। जो वे लोग बनाने सकते, बोलिया-धारा-रचना का प्रयोग करते हैं। सुंदर धशकों के एक लेखी और ज्युम्नू के लिए सुमारे अक्बर भवाना का प्रयोग होता है। नेपाल के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भागों में राधा और ज्युम्नू भागा का प्रचलन है। नेपाल की उत्तरी सीमा पर ज्युम्नू भागा-शिक्षक को नामांकन, भंप्रा, उदय और नमी माता जैसी भवानी का रूपाकरण होता है। नेपाली भागा नावाजी धार्मिक से सम्बन्धित है और यह रूप के क्या नेपाली को भागा है।

दिन को 2006 की उन्नति के संग्रह नेपाल में बोलियों नागरी भागा
लेखन का प्रभाव बन प्रकाश ने।
<table>
<thead>
<tr>
<th>नेपाली</th>
<th>हिन्दी</th>
<th>भोजपुरी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>40.7</td>
<td>10.0</td>
<td>0.9</td>
</tr>
<tr>
<td>7.5</td>
<td></td>
<td>0.8</td>
</tr>
<tr>
<td>6.0</td>
<td></td>
<td>0.8</td>
</tr>
<tr>
<td>5.6</td>
<td></td>
<td>0.8</td>
</tr>
<tr>
<td>4.4</td>
<td></td>
<td>0.4</td>
</tr>
<tr>
<td>3.7</td>
<td></td>
<td>0.2</td>
</tr>
<tr>
<td>4.7</td>
<td></td>
<td>0.2</td>
</tr>
<tr>
<td>3.5</td>
<td></td>
<td>0.2</td>
</tr>
<tr>
<td>3.1</td>
<td></td>
<td>0.2</td>
</tr>
<tr>
<td>2.0</td>
<td></td>
<td>0.1</td>
</tr>
<tr>
<td>2.0</td>
<td></td>
<td>0.1</td>
</tr>
<tr>
<td>1.3</td>
<td></td>
<td>0.1</td>
</tr>
<tr>
<td>1.0</td>
<td></td>
<td>0.5</td>
</tr>
</tbody>
</table>

रूपाली प्रसाद शोलास्वं - नेपाल - पृढ़ 8
कर्मचारी - नेपाल, पृढ़ 255
कवि मल्टन - नेपाल, पृढ़ 167
वैज्ञानिक - नेपाल, पृढ़ 189
मेचारी वैज्ञानिक - नेपाल, पृढ़ 252
कृपया विशेष निर्देशावली दें

लाखोरी प्रसाद शोलास्वं - नेपाल - पृढ़ 11
9. कोटिलोय कथाल
10. नेपाल-स्वतंत्रता का स्वतंत्रता तथा:
11. देशव्यतीत सरकार के वास्तविक केंद्रों।

नेपाल देश के वेतिन: साध्यांतर प्रलय: 11
12. गारापुराण, अध्याय-215: श्लोक-21-40
13. वालक का सार, नेपाल में पेठार्क व्यवहार-पु. 49
14. वालक का नेपाल, अंक-2, पृ. 61-63
15. नेपाल में लोक अनुशासन रचना: पृ. 11-12 वालाना अध्याय-13
16. नेपाल का एं लहास - नेपाल राज्य - पृ. 1
17. विश. 1961 के में नेपाल-चुनाव लोगों-से-पूरे वालाना अध्याय-16
18. वालक का सार - नेपाल में पेठार्क, स्वरूप - पृ. 1
19. अर्थ, पृ. 2
20. नेपाल का बालास - पृ. 42, नेपाल अध्याय-17, विश्वास प्रथा पू. 72
21. नेपाल का सार - नेपाल का पेठार्क, स्वरूप - पृ. 32
22. नेपाल-पु. 17, विश्वास प्रथा पू. 72
23. नेपाल, पृ. 2
24. नेपाल में पेठार्क, स्वरूप-पृ. 41
25. नेपाल का बालास - नेपाल का बालास, पृ. 51
26. नेपाल का स्वरूप - नेपाल का स्वरूप, विश्वास प्रथा
27. वेतिन नेपाल - नेपाल का स्वरूप - विश्वास प्रथा
28. नेपाल का स्वरूप - नेपाल का स्वरूप, पृ. 51
29. नेपाल का स्वरूप - नेपाल का स्वरूप, पृ. 42
30. नेपाल का स्वरूप - नेपाल का स्वरूप, पृ. 163-164
31. नेपाल का स्वरूप - नेपाल का स्वरूप, पृ. 51
32. नेपाल का स्वरूप - नेपाल का स्वरूप, पृ. 42
33. नेपाल का स्वरूप - नेपाल का स्वरूप, पृ. 163-164
34. नेपाल का स्वरूप - नेपाल का स्वरूप, पृ. 51
35) दे-नका राष्ट्र - नेपाल वा बिखास, पृ 3
36) नेपाल ओर गोरखन, पृ 18
37) नेपाली के चालक स्वियर-पृ 73 - वालकृत्ति स्थान
38) उपरित- - पृ 79
39) उपरिक्त- - पृ 80
40) उपरिक्त- - पृ 81
41) पृ 81
42) पृ 117
43) 4. कृत-नवजय राज्याकाळ सृजनात्मक प्रयास पृ 1

44) जीवनचरित्र भौमक मनक मनक बुधु पू भावालयो राजसाहो -

45) वैण्डोल- बाबा-रहमा, पृ 12-13
46) हेम सदन - नेपाल वा थालन पृ 129-130
47) वहाँ राज्याकाळ शीताल - नेपाल वा थालन, पृ 35
48) एक बाहु श्री, नेपाल वा थालन, पृ 14
49) जीतकाल राष्ट्र - नेपाल वा थिकास, पृ 25
50) पृ 26
51) वाहनो प्रसाद दीवासांव - नेपाल वा थालन, पृ 4
52) मुर्रुम - 10 / 43-44
53) वैविध्य के अत्यन्त-काँक लक्ष्य, 2-2
54) चित्रण-भुराण - 2 / 2
55) ताकों - ताकों -133
56) रियाल - भारत वा भारत लक्ष्य - पृ 189
57) नेपाल वा कथानो - पृ 4 - वाराणसी प्रसाद दीवासांव
58) रिक्षुका राष्ट्र - नेपाल वा थिकास, पृ 27
59) बीस्कार वा नेका-केला, पृ 196
60) भोपौ रिक्षु-भारत ओर बीस्कार वा कथानो वा थिकास, पृ 48
62- The race of the Mawar is a mixed race derived from Indian or Tibetan stocks and their religion naturally presents a corresponding mixture of the Indian and Tibetan creeds. The predominance of the Tibetan over the Indian stock is in the composition of their blood is as evident in the religion of the Mawar as it is in their language, their characters and their physical appearance -- Old field Nepal vol 11 p 73